R.N.I.-CHHHIN/2010/36256 वर्ष 10, अंक 33, जुलाई-सितम्बर 2019 I.S.S.N.-2320-3455

राष्ट्रसेतु
RASHTRASETU

Peer Reviewed / Refereed
Research Journal in Hindi

भारतीय साहित्य एवं भाषा समन्वय की
पुरस्कृत और पंजीकृत शोध पत्रिका

"अनुभूति के घेरे" में अभिव्यक्त नारी संवेदना

(विशेष संन्दर्भ-त्रिशूल, कैसे कहूँ, सही निर्णय)

■ डॉ. प्रीता एस.आर

दलित साहित्य, दलित समाज की वास्तविक पहचान करानेवाला साहित्य है । सामाजिक विभेद, वर्ण-व्यवस्था, ब्रम्हणवादी नैतिकता, सामाजिक-संरचनात्मक अन्याय, अत्याचार और शोषण के विरुद्ध अपनी अस्मिता को सजग रखने को लक्ष्य करके दलित साहित्य का सृजन हुआ । अत: दलित साहित्य में प्रतिरोध और प्रतिशोध का स्वर मुखरित है । समकालीन हिन्दी साहित्य में दलित साहित्य की प्राय: सभी विधाओं में दलित विमर्श चर्चा का विषय बना गया है । उसमें कहानी भी एक विधा है ।

दलित कहानी केवल दलित जीवन की त्रासदी को ही अभिव्यक्त नहीं करती, बल्कि अन्य समाजों के साथ उसके संबंध, भेदभाव और जड़ मानसिकता को भी व्यक्त करती है । दलित साहित्य की प्रमुख लेखिका है सुशीला टाकभौरे । कहानिकार कवयित्री, नाटककार आदि के रुप में सुशीला जी प्रसिद्ध है । 'स्वाति बूंद और खोरे मौती', यह तुम भी जानो, तुमने उसे कब पहचाना, हमारे हिस्से का सूरज (काव्य संग्रह), नंगा सत्य (नाटक), रंग और व्यंग्य (नाटक संग्रह), नीला आकाश, तुम्हें बदलना ही होगा (उपन्यास), शिकंजे का दर्द (आत्मकथा), परिवर्तन जरूरी है (लेख संग्रह), हिन्दी साहित्य के इतिहास में नारी, भारतीय नारी: समाज और साहित्य के ऐतिहासिक संदर्भ में (विवरण), टूटता वहम, अनुभूति के घेरे, संघर्ष (कहानी संग्रह) आदि उनकी प्रकाशित रचनाएँ हैं ।

सुशीला टाकभौरे का कहानी संग्रह 'अनुभूति के घेरे' 1997 में प्रकाशित हुआ । इसमें तेरह कहानियाँ हैं । सभी कहानियाँ दलित समाज और नारी जीवन की स्थितियों के आधार पर लिखी गई है । जहाँ नारी मनुवादी मान्यता के आधार पर क्षमा, त्याग, करुणा, ममता, दया, परोपकार आदि सद्भावों से परिपूर्ण आदर्श रुप है, वहाँ उनके पास अधिकार नहीं, केवल कर्तव्य ही कर्तव्य है । जिन्हें पूरा करते करते वह इतनी थक जाती है कि जीवन की आखिरी घड़ी तक वह अपने विषय में कुछ सोच नहीं पाती । नारी कितनी भी शिक्षित हो जाए, नौकरी करें, फिर भी समाज और परिवार में आज भी उसे स्मृतिकालीन मनुवादी दृष्टिकोण से ही देखा जाता है ।

अपनी सामाजिक स्थिति के साथ पारिवारिक समरसता बनाए रखने में स्त्री को विकट-मानसिक वैचारिक स्थितियों और संघर्षों का सामना करना पड़ता है । फिर भी समाज में विशेषकर पुरुषप्रधान समाज उसका सही मूल्यांकन नहीं करता । परिवार में रहनेवाली एक भारतीय नारी को हर बात पर ध्यान देना पड़ता है । धर्मो का पालन करना पड़ाता है । सब कुछ करने पर भी स्त्री होने के कारण उसकी भावनाओं को दबाये रखा जाता है ।

भारत जैसे एक देश में नारी को सम्मान तो दिया जाता है, फिर भी उसे बाँधकर चलना सिखाते हैं । कुछ भी करने से पहले सोचने को मजबूर कर देते हैं । बचपन से ही उसे बांधकर चलना सिखाते हैं । इस कहानी संग्रह की 'कैसे कहूँ' कहानी लेखिका का ही अनुभव है । इसमें लेखिका ने नारी मन के द्वन्द का चित्रण किया है । कहानी में दर्शाया गया है कि भारतीय नारी कितनी संवेदनशील है, वह छोटी-छोटी बातों पर भी कितना विचार करती है । उसमें इतना साहस भी नहीं होता कि वो अपनी बात सीधे कह सके ।

कहानी की नायिका कुसुमांजली है जो खुद एक साहित्यकार है । उसके जीवन में द्वन्द तब आता है जब एक पाठक का प्रेमपत्र आता है । यहाँ तक की खुद अपने पति और सहेली से भी कहने से डरती है । लेखिका सहेली को बताना चाहती है मगर उसे डर है कि सहेली अपने मन का कुछ जोड़कर अपने नज़रिए से समाज के सामने पेश करेगी । यह विडंबना बड़ी ही अजीब है कि खुद एक साहित्यकार होकर भी लेखिका इस दुविधा में रहती है ।

भारतीय नारी चाहे वो अपने कर्म क्षेत्र में किसी भी उच्च स्थान पर विराजित हो, उसके लिए इस प्रकार की छोटी सी बात भी आत्मसंघर्ष का विषय बन जाती है, मन बेचैन हो जाता है । वह चिन्तित मन से सोचती है कि "किसी को पता चला तो ? लोग मुझे ही दोष देंगे । परिवार की मान-मर्यादा, माता-पिता के दिये हुए संस्कार, पति का विश्वास, बच्चों के समक्ष अपने चरित्र की छाप, सब कुछ पल भर में धूल